आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2323 • उदयपुर, मंगलवार 04 मई, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

गल्फ स्ट्रीम की समझ बदल सकते हैं सेलड्रोन

गल्फ स्ट्रीम के कारण वैश्विक मौसम प्रभावित होने के मामले मे वैज्ञानिकों में बेहतर उम्मीद जगी है। उन्होंने ऐसा रोबोटिक सेलड्रोन या सर्फबोर्ड लांच किया है।

जो बिना चालकदल के सतह पर रहने वाले वाहन की तरह है। यह एक वर्ष तक समुद्र की सतह पर रहकर संकलित आंकड़ों को भेजने में सक्षम है। कैलिफोर्निया के अलमेडा में सेलड्रोन कंपनी द्वारा विकसित इस उपकरण का इस्तेमाल विश्व और महासागरों के मौसम पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने के लिए किया जाता हैं। यह उपकरण जीरो कार्बन फुटप्रिंट के साथ हजारों वर्गमील का क्षेत्रफल कवर करता है।

गल्फ स्ट्रीम पानी की एक महासागरिय धारा है जो पश्चिम अंटलाटिक से लेकर यूनाइटेड किगंडम तक घुमावदार रास्ता बनाती है जिससे नियमित रूप से उत्तरी गोलार्द्ध में तूफानी हवा प्रणालिया प्रभावित होती है। इससे दुनिया भर में शिपिंग और समुद्री व्यापार बाधित हो जाता है। गल्फ स्ट्रीम भी कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषक है जो जलवायु परिवर्तन की गति को तेज होने से रोकता है।

यूनिवर्सिटी ऑफ रोड आइलैंड में समुद्र विज्ञान की प्रोफेसर जेम पाल्टर कहती है कि उनका उद्देश्य बेहतर तरीके से समझना था कि गल्फ स्ट्रीम कैसे वैश्विक कार्बन चक्र पर अपना असर छोड़ती है। मानव जाति सालाना 35 बिलियन टन से अधिक कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन करती है।

माना जाता है कि एक तिहाई कार्बन महासागरों में तुरंत विलीन हो जाता है।

अंटार्कटिका में हाल के सेलड्रोन मिशनों से पता चलता है कि कार्बन चक्र में समुद्र की भूमिका उतनी नहीं है, जितनी कि समझी जाती रही है। ये ड्रोन सूर्य की रोशनी और हवा से संचालित होते हैं और बेतार संचरण के द्वारा डेटा को लिंक कर देते हैं।

देश में खुलेंगे 7 मेगा टैक्सटाइल पार्क

आम बजट में की गई घोषणा के अनुसार केन्द्र सरकार देश में 7 मैगा टैक्सटाइल पार्क स्थापित करेगी, इससे राजस्थान की अपेक्षाएं फिर से जागी है।

राजस्थान को उम्मीद है कि इन 7 में से एक पार्क यहां स्थापित होगा। यह उम्मीद मुख्यतः भीलवाड़ा के लिए है, जहां औद्योगिक माहौल पहले से मौजूद है।

इस पार्क की स्थापना हुई तो लगभग 10 हजार करोड़ का नया निवेश आएगा और लगभग 20 हजार लोगों को रोजगार मिलेगा। देश में वर्ष 2005 से शुरू हुए क्रम के तहत अब तक 50 टैक्सटाइल पार्को को मंजूरी दी गई है। इनमें से 22 पार्को में उत्पादन हो रहा।

राजस्थान में फिलहाल किशनगढ़, पाली और जयपुर में टैक्सटाइल पार्क स्थापित किए गए हैं। भीलवाड़ा को नया पार्क मिलता है तो यह प्रदेश का चौथा पार्क होगा।

पार्क में ये मिलेगी सुविधाएं

अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे, सामान्य उपयोगिताओं ओर रिसर्च एंड डेवलपमेंट लैब के साथ यह पार्क एक हजार एकड़ से अधिक भूमि में होगा। निर्यात के लिए परिविहन की विशेष सुविधा उपलब्ध होगी। टैक्सटाइल सेक्टर को प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेटिव स्कीम (पीएलआइ) योजना से जोड़ा जाएगा।

इससे देश को आत्मनिर्भर बनने, विनिर्माण और निर्यात बढ़ाने में मदद मिलेगी। पार्क में स्पिनिंग, वीवींग, प्रोसेसिंग और रेडिमेंड इण्डस्ट्री एक साथ लगेगी। एक साथ सभी इण्डस्ट्री होने से कच्चे माल की भी सुविधा रहेगी।

सेवा–जगत्
मन से सेवा, नारायण सेवा

पीड़ित किसान परिवार को मदत

आठ दिन पहले गंगाखेड़ क्षेत्र के कतकरवाड़ी में किसान मंचक कतकड़े के घर में भीषण आग लग गई थी। आग ने उनके घर और उनकी आजीविका बकरियों और उनके दो चूजों को नष्ट कर दिया और दो बैलों को क्षति पहुंचाई। गरीब परिवार संकट में आ गया। कोरोना के कारण, उन्हें शिकायत दर्ज करने के लिए वाहन भी नहीं मिल सके।

मदद की आशा से गरीब किसान परिवार के सदस्य डेप्युटी कलेक्टर सुधीर जी पाटिल के कार्यालय में गए और उन्हें अपनी स्थिति व क्षति की जानकारी दी। यह महसूस करने हुए इस किसान को कानून के ढ़ांचे के भीतर मदद नहीं मिलेगी, सुधीर पाटिल ने धर्मार्थ संगठन, नारायण सेवा संस्थान उदयपुर जो हर मुश्किल में जरूरतमंद को सहायता के लिए तैयार रहता है। परभणी जिला संयोजिका श्रीमती मंजू दर्डा से संपर्क किया और उनसे मदद का अनुरोध किया। इस पर उन्होंने पीड़ित किसान परिवार को खाद्यान्न, बर्तन, कपड़े आदि सामान दिया। इस अवसर पर पूजा दर्डा, सखाराम बोबड़े, राहुल सबने एवं हर्ष आंधले भी उपस्थित थे।

'घर-घर भोजन' मुहिम संक्रमितों के लिये उपयोगी

नारायण सेवा संस्थान ने कुछ दिनों पूर्व कोरोना संक्रमितों के घर–घर भोजन पहुंचाने की मुहिम शुरू की थी। जो बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो रही है। संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने बताया कि प्रतिदिन कोरोना संक्रमितों की संख्या बढ़ने के साथ भोजन की मदद चाहने वालों की संख्या भी बढती जा रही है। पहले दिन 90 पैकेट, दूसरे दिन 160 और शुक्रवार को 280 भोजन पैकेट घरों तक पहुंचाये। इस सेवा में संस्थान साधक कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते हुए पीपीई किट पहनकर भोजन वितरित कर रहे है।

मेहनत का शुभ मुहूर्त नहीं होता

ईरान का राजा था शाह अब्बास। उन्हें एक कार्यक्रम में आंमत्रित किया गया। नई राजसी पोशाक में राजा बेहद शानदार नजर आ रहे थे। उनके चेहरे का नूर बता रहा था कि वे अंदर से भी उतने ही शानदार व्यक्ति हैं। वहां के भव्य बाग में पौधारोपण का कार्यक्रम था। उस दौरान वहां का माली अस्वस्थ था। कार्यक्रम का उद्घाटन राजा ने कुछ पौधों को लगाकर किया।

अगले दो दिनों के बाद जब माली आया तो पौधों की बेतरतीब कतारें देखीं। उसने उन्हें निकालकर दोबारा रोप दिया। उसके अनुभवी हाथों से पौधे बेहद सुंदर और तरतीब से लगे हुए दिख रहे थे। कुछ लोगों ने इस बात की शिकायत राजा शाह अब्बास से की, 'राजा साहब, आपने तो शुभ–मुहूर्त देखकर पौधे रोपे थे, पर इस माली ने पौधे निकालकर आपका अपमान किया है।'

राजा ने बाग का जायजा लिया और फिर माली को बुलवाया। माली सिर झुकाए खड़ा था। वह इस इंतजार में था कि कब उसे सजा सुनाई जाएगी। वह गरीबी से पहले ही परेशान था। घर में बीमार पत्नी थी। वह कुछ सोच पाता तभी कानों में शहद घोलता हुआ राजा साहब का स्वर सुनाई दिया। 'हर व्यक्ति अपने काम में महारत हासिल कर लेता है। यह महारत उसे उसके ही प्रयत्नों से और लगातार प्रयास से मिलती है।'

राजा साहब ने माली की ओर देखते हुए कहा, 'तुम्हारा काम वाकई में तारीफ के काबिल है। वहां पर जिस तरह के पेड़–पौधे खूबसूरती से तुमने लगाएं हैं वह वाकई काबिले तारीफ है। पूरा बागीचा तुम्हारे कुशल हाथों की कारीगरी की गवाही दे रहा है।' राजा ने आगे कहा 'मेहनत करने वालों के लिए कोई शुभ–मुहूर्त मायने नहीं रखता है। उनके लिए तो मुहूर्त शुभ नहीं होता है बल्कि कार्य ही सबकुछ होता है। जो माली राजदंड की परवाह किए बगैर बाग का ध्यान मन लगाकर करता है उसे तो पुरस्कार मिलना चाहिए।' राजा ने अपनी बात खत्म की और पुरस्कार देकर माली को विदा किया।

नेत्रदान का महत्व जानें

आँखों का हमारे जीवन में महत्वः

आँखों और दृष्टि का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। यदि व्यक्ति के जीवन में दृष्टि न हो तो उसका जीना सरल नहीं रहता है और उसे प्रत्येक कार्य के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। ऐसे तो सभी आंखों के महत्व को समझते हैं और इसीलिए इसकी सुरक्षा भी सभी बड़े पैमाने पर करते हैं। हममें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दूसरों के बारे में भी सोचते हैं। आंखें ना सिर्फ हमें रोशनी दे सकती हैं बल्कि हमारे मरने के बाद वह किसी और की जिंदगी में उजाला भी भर सकती हैं।

लेकिन कुछ लोग अंधविश्वास के कारण नेत्रदान नहीं करते। उनका मानना है कि अगले जन्म में वे नेत्रहीन ना पैदा हो जाएं। इस अंधविश्वास की वजह से दुनियां के कई नेत्रहीन लोगों को जिंदगी भर अंधेरे में ही रहना पड़ता है। सभी लोगों को इस बात को समझना होगा और नेत्रदान अवश्य करना चाहिए। हमारा एक सही फैसला लोगों के जिंदगी में उजाला ला सकता है। नेत्रदान के महत्व को देखते हुए हर साल 10 जून को विश्व नेत्रदान दिवस मनाया जाता हैं। इस दिन नेत्रदान करने के लिए लोगों को जागरूक किया जाता हैं। नेत्रदान करना महादान करने जैसा होता हैं। लोग धन, अन्न, विद्या, श्रम, रक्त आदि का दान तो करते ही हैं लेकिन लोगों को मरने से पहले नेत्रदान करने का भी संकल्प लेना चाहिए। ताकि जो व्यक्ति

नेत्रहीन हैं उन्हें एक नई रोशनी मिल सके।

खुद से धोखाधड़ी

एक बार समुद्र में बहुत बड़ा तूफान आया। जहाज अब डूबा तब डूबा। जहाज के सब लोगों ने अपने ढंग से भगवान को प्रार्थना करनी शुरू कर दी। उस जहाज में एक बड़ा अमीर आदमी भी था। उसने दान की बड़ी महिमा सुन रखी थी। उसने जोर से चिल्ला कर कहा कि नगर में जो मेरा दस लाख का महल है उसको मैं बेच कर जरूरतमंदों में बांट दूंगा। साथ के लोगों ने सुना लिया और तूफान शांत भी हो गया। उसने सोचा, मैं बिना बात कठिनाई में पड़ गया। नगर में पहुँच कर लोगों ने कहा, अपना वायदा पूरा करो। उसने कहा कि बिल्ली व मकान साथ–साथ बिकेगा। बिल्ली का दाम एक रुपया। खरीदने वालों ने दस लाख एक रुपया दे दिया। मालिक ने दस लाख तो जेब में रख लिया और एक रूपया गरीबों में बांट दिया। यह चतुरता नहीं, स्वयं को धोखा देना है।

नारायण दिव्यांग सहायता एवं निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर

फतेहपुरी , दिल्ली
श्री जतनसिंह भाटी,मो.- 9999175555
श्री कृष्णावतार खंडेलवाल -7073452155
कटरा बरियान, अम्बर होटल के पास, फतेहपुरी,दिल्ली-6

रायपुर
श्री भरत पालीवाल,मो. 7869916950
मीरा जी राव, म.नं.-29/500 टीवी टावर रोड, गली नं.-2, फेस-2 श्रीरामनगर,पो.-शंकरनगर,रायपुर,छ.ग.

अम्बाला
श्री राकेश शर्मा,मो. 07023101160
सविता शर्मा, 669, हाऊसिंग बोर्ड कोलोनी अरबन स्टेट के पास, सेक्टर-7 अम्बाला (हरियाणा)

भायंदर (मुम्बई)
श्री मुकेश सेन, मो. 9529920090
ओसवाल बगीची, आरएनटी पार्क भायन्दर ईस्ट मुम्बई - 401105

इन्दौर
श्री जसवंत मेनारिया,मो. 09529920087
जी 02, 19-20 सुचिता अपार्टमेंट शंकर नगर,नियर चंद्र लोक चौराहा खजराना रोड, इंदौर-452018

मोदीनगर, यू.पी.
आर्य समाज मंदिर, सीकरी पेट्रोल पम्प के पास, मोदी बाग के सामने, मोदीनगर -201204

राजकोट
श्री तरूण नागदा,मो. 09529920083
भगत सिंह गार्डन के सामने आकाशवाणी चौक, शिवशक्ति कॉलोनी, ब्लॉक नं. 15/2 युनिर्वसिटी रोड,राजकोट (गुजरात)

लोनी
श्री धर्मेश गर्ग, 9529920084
दानदाता : डॉ. जे.पी. शर्मा, 9818572693
श्रीमती कृष्णा मेमोरियल नि:शुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर, 72 शिव विहार, लोनी बन्थला, चिरोड़ी रोड (मोक्षधाम मन्दिर) के पास लोनी, गाजियाबाद (यू.पी.)

जयपुर
श्री हूकम सिंह,9928027946
बद्रीनारायण वैद फिजियोथेरेपी हॉस्पीटल एण्ड रिचर्स सेन्टर बी-50-51 सनराईज सिटी,मोक्ष मार्ग, निवारू झोटवाड़ा,जयपुर

गाजियाबाद (1)
श्री सुरेश गोयल,मो. 08588835716
184, सेठ गोपीमल धर्मशाला केलावालान, दिल्ली गेट गाजियाबाद (उ.प्र.)

अहमदाबाद
श्री कैलाश चौधरी,मो. 09529920080
सी-5, कौशल अपार्टमेन्ट,नियर शाहीबाग, अण्डर ब्रीज के नीचे,शाहीबाग, अहमदाबाद (गुज.)
3/28, गुजरात हाऊसिंग सोसायटी नियर बापू नगर पुलिस स्टेशन अहमदाबाद (गुजरात)

शाहदरा, दिल्ली
श्री भंवर सिंह मो. 7073474435
बी-85, ज्योति कॉलोनी, दुर्गापुरी चौक,शाहदरा, दिल्ली-32

गाजियाबाद (2)
सुरेश कुमार गोयल -8588835716
श्रीमती शीला जैन नि:शुल्क फिजियोथेरपी सेंटर,बी.-350 न्यू पंचवटी कॉलोनी, गाजियाबाद -201009

हैदराबाद
श्री महेन्द्रसिंह रावत, 09573938038
लीलावती भवन, 4-7-122/123 इसामिया बाजार, कोठी , संतोषी माता मंदिर के पास,हैदराबाद -500027

आगरा (उ.प्र.)
श्री राजमल शर्मा,मो. 7023101174
104बी, विमल वाटिका, कर्मयोगी एन्कलेव, कमलानगर, जैन मन्दिर के सामने वाली गली, आगरा (उ.प्र.)

हाथरस
श्री जे.पी.अग्रवाल -9453045748
श्री योगेश निगम मो. 7023101169
एलआईसी बिल्डिंग के नीचे, अलीगढ़ रोड, हाथरस (यू.पी.)

मथुरा
श्री नवनीत सिंह पंवार,मो.-7023101163
77-डी, कृष्णा नगर, मथुरा (उ.प्र.)

अलीगढ़
श्री योगेश निगम,मो. 7023101169
एम.आई.जी. -48,विकास नगर आगरा रोड़, अलीगढ़ (यू.पी)

देहरादून
श्री मुकेश जोशी मो. 7023101175
साई लोक कॉलोनी,गांव कार्बरी ग्रांट, शिमला बाय पास रोड, देहरादून पिनकोड -248007 (उत्तराखंड)

रतलाम
श्रीमती विमला मुखीजा
नि:शुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर
24 विमल निवास ,स्ट्रीट नंबर 1,
उजाला हॉटल के पीछे,
स्टेशन रोड ,रतलाम
(म.प्र.) पिन-457001

सम्पादकीय

आस्था, श्रद्धा, विश्वास या और किसी शब्द से हम अपने इस आदरभाव को अभिव्यक्त करें पर इसके पीछे जो सार है वह यह है कि हम किसी के प्रति निःशंक हैं। आश्वस्त हैं, नतमस्तक हैं, पूर्ण समर्पित हैं कहने–सुनने में ये शब्द अच्छे भी लगते हैं पर हमारी श्रद्धा, हमारा विश्वास या हमारी आस्था कितनी सुदृढ़ है यह कभी सोचते भी हैं क्या? अधिकतर लोगों का अपने ईष्टदेव या अपने सद्गुरु के प्रति सद्भाव होता ही है। वे पूरी निष्ठा के साथ उनको मानते हैं। जब कभी जीवन में संकट या कष्ट उपस्थित होते हैं तो मनुष्य तुरंत उसका सामना करता है और फिर अपने ईष्ट या सद्गुरु से प्रार्थना करने लगता है कि वे उससे मुक्त कर दें। यही तरीका है जो सभी अपनाते हैं। लेकिन क्या यह नहीं हो सकता कि हम कष्ट या संकट को ईष्ट या सद्गुरु से बड़ा न मानते हुए, उनसे फरियाद के स्थान पर कष्ट या संकट को कह सकें कि तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते क्योंकि तुम मेरे ईष्ट या मेरे सद्गुरु से बड़े नहीं हो। जिस दिन हम इस भाव व श्रद्धा–निष्ठा से सोचेंगे तो शायद कष्ट और संकट पास ही नहीं फटकेंगे।

कुछ काव्यमय

कोई समस्या मेरे प्रभु से,
बड़ी नहीं हो पायेगी।
उनके होते मुझ पर फिर
संकट–बदली क्यों छायेगी ?
कष्ट मुझे कैसे व्यापेगा,
ईष्ट मेरा मेरे संग है।
मुझ पर तो उनकी करुणा से
चढ़ा पूर्ण निष्ठा रंग है।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

सृजन ही जीवन है

एक चित्रकार ने बाजार में अपना चित्र टांग कर नीचे लिख दिया कि इसे देखें और जहां कमी हो वहां चिह्न लगा दें। सायं जाकर देखा, पूरा चित्र चिन्हों से भर गया था। उसने सोचा, बड़ा अनर्थ हो गया।

दूसरे दिन उसने एक चित्र फिर टांगा, लिख दिया कि जहां कोई खामी है, सुधार दें। सांझ को जाकर देखा तो चित्र वैसा का वैसा मिला, कोई परिवर्तन नहीं।

हम कमियां बहुत निकाल सकते हैं, त्रुटियों की ओर हमारा ध्यान जा सकता है, बिन्दु लगा सकते हैं, किन्तु जहां सुधारने वाली बात आती है वहां कुछ भी नहीं। हम केवल खामी की बात न पकड़ें, कुछ सृजन करें।

अपनों से अपनी बात

दान, अपने सौभाग्य का पैगाम

बहूत समय पहले की बात है। रमनपुर राज्य में सुबह–सुबह एक भिखारी भीख मांगने निकला। कई बार घूमने के बाद घर से उसे कुछ अनाज मिला। वह राजपथ की तरफ जाने लगा तो उसने देखा कि सामने से राजा की सवारी आ रही थी।

वह सड़क के एक ओर खड़ा हो गया और सवारी की गुजर जाने की प्रतीक्षा करने लगा। लेकिन राजा की सवारी उसके सामने ही रूक गई। राजा एक पात्र उसके सामने करते हुए बोले, 'मुझे कुछ भीख दे दो।

देखो, मना मत करना। राज्य पर संकट आने वाला है। मुझे किसी ज्योतिषी ने बताया है कि रास्ते में जो भी पहला भिखारी मिले उससे भीख मांग लेना। इससे संकट टल जाएगा।

भिखारी आश्चर्य चकित हो गया। उसने अपने झोले में हाथ डाला और एक मुट्ठी अनाज भर लिया। लेकिन उसके मन में लालच आ गया की इतना दे देगा तो झोले में क्या बचेगा।

उसने मुट्ठी ढीली की और कुछ अनाज कम करके राजा के पात्र में डाल दिया। घर जाकर पत्नी से बोला, 'आज तो अनर्थ हो गया। राजा को भीख देनी पड़ी। नहीं देता तो क्या करता।' पत्नी ने झोला उल्टा तो कुछ दाने सोने के निकले।

यह देखकर भिखारी बोला, 'काश! सारा अनाज दे देता तो झोले में उतने सोने के दाने भरे होतें जीवन भर की गरीबी मिट जाती।' उसकी समझ में आ गया था, कि दान देने से संपन्नता बढ़ती है घटती नहीं। बसंत के आगमन की खुशी में पेड़– लताएं अपने तमाम पत्ते न्यौछावर कर देते हैं, लेकिन कुछ ही दिनों बाद ये पेड़ पुनः नये पत्तों से भरपूर हो उठते हैं। अभिप्राय यह है कि दिया हुआ दान पुनः किसी न किसी माध्यम से हमें मिलता है।

– कैलाश 'मानव'

ईमानदारी का प्रकाश

मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र है –विचार और मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है –विचार आप तय करें – कौन से विचार को अपनाना है।

एक चोर था। वह चोरियाँ करके अपना जीवनयापन करता था। उसका एक बेटा था, जिसको उसने अच्छी शिक्षा–दीक्षा देने का प्रयास किया, लेकिन खस्ता माली हालत के चलते, अधिक नहीं पढ़ा पाया।

लेकिन उसका बेटा, कम पढ़ा–लिखा होने के बावजूद भी बहुत होशियार था। उसने बहुत जगह नौकरी के लिए आवेदन भेजे, लेकिन उसे नौकरी नहीं मिली। उसके पिता ने सोचा कि क्यों न मैं इसे अपना ही काम सिखा दूँ। यह सोचकर वह अपने बेटे को चोरी करने के लिए एक घर के बाहर ले जाता है। घर के अंदर अंधेरा था, बाहर केवल कुछ लाइटें चमक रही थीं।

वह अपने बेटे से कहता है–चल, इस घर के अंदर चलें। मैंने पूर्व में इस घर में बहुत–सी चोरियाँ की हैं, आज तुझे भी चोरी करना सिखा देता हूँ। लेकिन उसका बेटा उस रोशनी को ही देखता रहता है। पिता बार–बार बेटे को घर के अंदर चल कर चोरी करने के लिए कहता है, लेकिन बेटा वहीं खड़ा–खड़ा उस रोशनी को देखता रहता है।

कहते–कहते जब पिता हार जाता है तो पूछता है कि बेटे तू आगे क्यों नहीं बढ़ रहा है, तो बेटा कहता है –पिताजी आपने इतनी बार इस घर में चोरी की है, लेकिन इस घर में पहले भी उजाला था और अब भी उजाला है। आप यहाँ से चारी करके इतनी बार सामान अपने घर ले गए, लेकिन वहाँ पहले भी अंधकार था और अब भी अंधकार है, तो ज्यादा अच्छा क्या है? क्यों न मैं भी अब ऐसे कर्म करूँ कि हमारे घर में भी उजाला रहे। ऐसे कर्म न करूँ कि घर में अंधेरा रहे।

बेटे की बात सुनकर पिता की आँखों में आंसू आ गए और उसी दिन से दोनों बाप–बेटे ने ईमानदारी से काम करना शुरू कर दिया। ईमानदारी की कमाई का प्रकाश, बरसों तक चमकता रहता है।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

मदन सीधा साधा धर्मपारायण व्यक्ति था। भीण्डर में बर्तन की छोटी सी दुकान थी जो वह अपने बड़े भाई देवीलाल के साथ चलाता था। छोटा सा गांव था, बर्तन के साथ–साथ कपड़े व छोटी मोटी अन्य चीजें भी रखते थे। दोनों भाई अभावों व गरीबी में ही पले–बढे थे। पिता किशनलाल का कम उम्र में ही निधन हो गया था। हालत इतनी खराब थी कि देवीलाल की उम्र बढ़ती जा रही थी फिर भी उसका विवाह नहीं हो पाया था।

अवसरों की कमी तथा अभावों के कारण कई लोग गांव से पलायान कर दूर दूर चले गये थे। इनमें किशनलाल का एक दूरी का भाई भी था। महाराष्ट्र के पांचोरा कस्बे में आकर इसने अपना अच्छा कारोबार जमा लिया था, मगर ईश्वर ने उसे संतान सुख नहीं दिया था।

इस भाई की नजर किशन के छोटे बेटे मदन पर थी। तब आपस के रिश्तेदारों के बच्चे गोद लेने की प्रथा आम थी। जय देवीलाल के समक्ष छोटे भाई मदन को गोद रखने का प्रस्ताव आया तो वह खुशी खुशी मान गया, सोचा इसी बहाने छोटे भाई का जीवन सुधर जायगा।

मदन का अपने बड़े भाई के प्रति बहुत लगाव था, वह उनसे बिछड़ने की कल्पना भी नहीं कर सकता था मगर हालात ऐसे थे कि दो वक्त की रोटी जुटाना भी दुष्कर था। यही सोचकर कि इसी बहाने बड़े भाई की जिम्मेवारियों पर वजन हल्का हो जायगा, मदन पांचोरा चला गया।

पांचोरा में सभी प्रकार की सुख सुविधाएं थी फिर भी मदन का ध्यान अपने बड़े भाई में ही अटका रहता। धीरे धीरे जिन्दगी चल निकली और मदन ने हालात से स्वयं को अभ्यस्त कर लिया। शीघ्र ही दत्तक पिता ने मदन की सगाई पक्की कर दी। सगाई पर सोना चढ़ाना पड़ता था। दत्तक पिता ने मदन से साफ साफ कह दिया कि वो सोना नहीं चढाएगा।

सोने के बिना सगाई संभव नहीं थी। उसने कहा कि भीण्डर जाकर अपने भाई से सोना ले आओ तो सगाई हो जायेगी। मदन को बहुत बुरा लगा, वह अपने भाई की हालत अच्छी तरह से जानता था। पांचोरा से उसका मन उचट चुका था, उसने भीण्डर लौटने का यह बहाना अच्छा देखा। सोना लाने के नाम से उसने पांचोरा से विदाई ली और भीण्डर आ गया।

पुनः प्रारम्भ : अंश-1

अनेक बीमारियों की जानकारी देते हैं –नाखून

आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया हो कि आपके नाखून भी बीमार हो सकते हैं। नाखून कैरटिन से बने होते हैं। यह एक तरह का पोषक तत्व है, जो बालों और त्वचा में होता है। शरीर में पोषक तत्वों की कमी या बीमारी होने पर कैरटिन की सतह प्रभावित होने लगती है।

स्वास्थ्य का संकेत –नाखूनों में किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन हो तो स्वास्थ्य के प्रति सचेत हो जाना चाहिए। दुनियाभर में हुए कुछ शोधों के अनुसार यह तथ्य प्रमाणित हो चुका है कि विभिन्न बीमारियों में नाखूनों का रंग बदल जाता है। जैसे सफेद रंग के नाखून लीवर से संबंधित बीमारियों जैसे हेपेटाइटिस की खबर देते हैं। अगर हम ये कहें कि नाखून आपके सेहत का हाल बयान करते हैं तो ये गलत नहीं होगा। जानिए नाखूनों से कैसे मिलता है स्वास्थ्य का संकेत

1 पीले नाखून–पीले रंग के नाखून जो आकार में मोटे हो और धीरे–धीरे बढ़ते हो, फेफड़े संबंधी बीमारियों के परिचायक होते हैं। साथ ही नाखूनों का पीलापन फंगल इन्फेक्शन और कुछ मामलों में थायरॉयड, सिरोसिस जैसी त्वचा की समस्या जैसे गंभीर रोगों का भी लक्षण हो सकता है। इसके अलावा नाखूनों का पीलापन पीलिया के लक्षण को भी बताता है।

2 आधे सफेद और आधे गुलाबी नाखून – किडनी से संबंधित बीमारियों का संकेत देते हैं। इसके अलावा यदि आपके नाखूनों की पर्त सफेद है तो यह लक्षण शरीर में खून की कमी (एनीमिया) का लक्षण होता है।

3 नाखूनों में सफेद धब्बे – कई बार आपने देखा होगा कि आपके नाखूनों में सफेद धब्बे नजर आने लगते हैं। और धीरे–धीरे नाखूनों पर सफेद धब्बे बढ़ने लगते हैं, यह पीलिया या लिवर संबंधी अन्य रोगों की ओर इशारा करते हैं।

4 कमजोर नाखून – कमजोर या नाजुक नाखून शरीर में कैल्शियम की कमी को दर्शाते हैं। इसके अलावा अगर ये सूखे हो या बहुत जल्दी टूट जाएं, तो यह आपके शरीर में विटामिन 'सी', फोलिक एसिड, और प्रोटीन की कमी को दर्शाता है। इसके अलावा आपको थायराइड की समस्या हो सकती है।

5 भूरे या काले धब्बे – भूरे या काले धब्बे आमतौर पर नाखून के आस–पास की खाल पर फैल जाते हैं। यह एक बड़ा धब्बा या छोटे–छोटे निशान भी हो सकते हैं। इस तरह के धब्बे हाथ और पैर के अंगूठों पर होते हैं। यह धब्बे त्वचा या आंख की रसौली की ओर इशारा करते है।

6 नाखूनों में नीलापन – कई बार शरीर में ऑक्सीजन का संचार ठीक प्रकार से नहीं होता है जिसके कारण नाखूनों का रंग नीला होने लगता है। नाखूनों को नीला होना फेफड़ों में संक्रमण, निमोनिया या दिल से संबंधित किसी रोग का लक्षण हो सकता है।

यदि आप को किसी नाखून का ऊपरी सिरा फटा दिखाई पडे या नाखून में पीलापन नजर आए या कभी नाखून चम्मच जैसा दिखे, नाखून धंसा नजर आने लगे तो आपको तुंरत डॉक्टर के पास जाना चाहिए और सलाह लेना चाहिए।

अनुभव अमृतम्

मैं तो प्रतापगढ़ का रहने वाला हूँ। क्या प्रतापगढ़ मेरे गांव में, मेरे जिले में आप सर्जिकल केम्प कर सकते हैं? कुछ क्षणों में ही भगवान ने मन में विचार किया करना चाहिये। ये सम्भव है, ये सत्य है, ये करने योग्य है, वहीं मैंने कहा– हाँ भाईसाहब प्रतापगढ़ में सर्जरी केम्प कर सकते हैं। उन्होंने तुरन्त अपने भाई को फोन मिलाया।

जाने से पहले जरा, काम करो शुभ कोय।
सेवा, मदद, सहायता, जिसकी जैसी होय।।

प्रतापगढ़ में छोटे भैया को कहा अपने दिव्यांग, अपाहिज टेढ़े पैर से चलने वाले कभी खड़े नहीं हुये, कभी चले नहीं, जिनके पैर घुटने टेड़े हो गये, पैर टेढ़ा हो गया, हाथ भी टेढ़ा हो गया ऐसे बच्चों को दिव्यांग से सबलांग बनाने हेतु ये कैलाश जी मेरे पास बैठे हैं। नारायण सेवा वाले हैं इनके साथ जो भाईसाहब बैठे है उनके निमंत्रण पर ये मेरे से मिलने आये हैं। तारीख भी तय करके गये है। उन्होंने कहा कैलाश जी मेरी हवेली बड़ी है। हॉलसेल में गेंहू का व्यापार है परिवार में।

मान करे सबको सुखी, दुःखी करे अपमान।
सोच समझ कर बोलिये, कर सबका सम्मान।।
सेवा ईश्वरीय उपहार– 126 (कैलाश 'मानव')

चरित्र की सीढ़ियां

एक आदमी अपने हाथ में दो ऊंचे डण्डे लेकर एक महल की ऊपरी मंजिल पर चढ़ने का प्रयास कर रहा था। दूसरे आदमी ने देखा तो पूछा, "तुम यह क्या कर रहे हो?" वह बोला, "मेरे पास 'सम्यक् ज्ञान' और 'सम्यक् दर्शन' के दो डंडे हैं। मैं इनके सहारे इस महल की ऊपरी मंजिल पर पहुंचना चाहता हूं।" पहले ने कहा, "मैंने बड़ी मेहनत से इन्हें प्राप्त किया है। क्या सारा श्रम व्यर्थ जायगा?"

दूसरे आदमी ने कहा, "तुम्हारा श्रम व्यर्थ नहीं जाएगा, यदि तुम सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दर्शन के इन दो खड़े डंडों में 'सम्यक् चरित्र' की आड़ी सीढ़ियां लगा सको।" 'सम्यक् ज्ञान' और 'सम्यक् दर्शन' के दो खड़े डंडों में 'सम्यक् चरित्र' की आड़ी सीढ़ियां लगाने से एक ऐसी नसैनी तैयार हो जाती है, जिस पर एक–एक कदम उठाकर आदमी अपने लक्ष्य तक पहुंच सकता है।

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।
संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

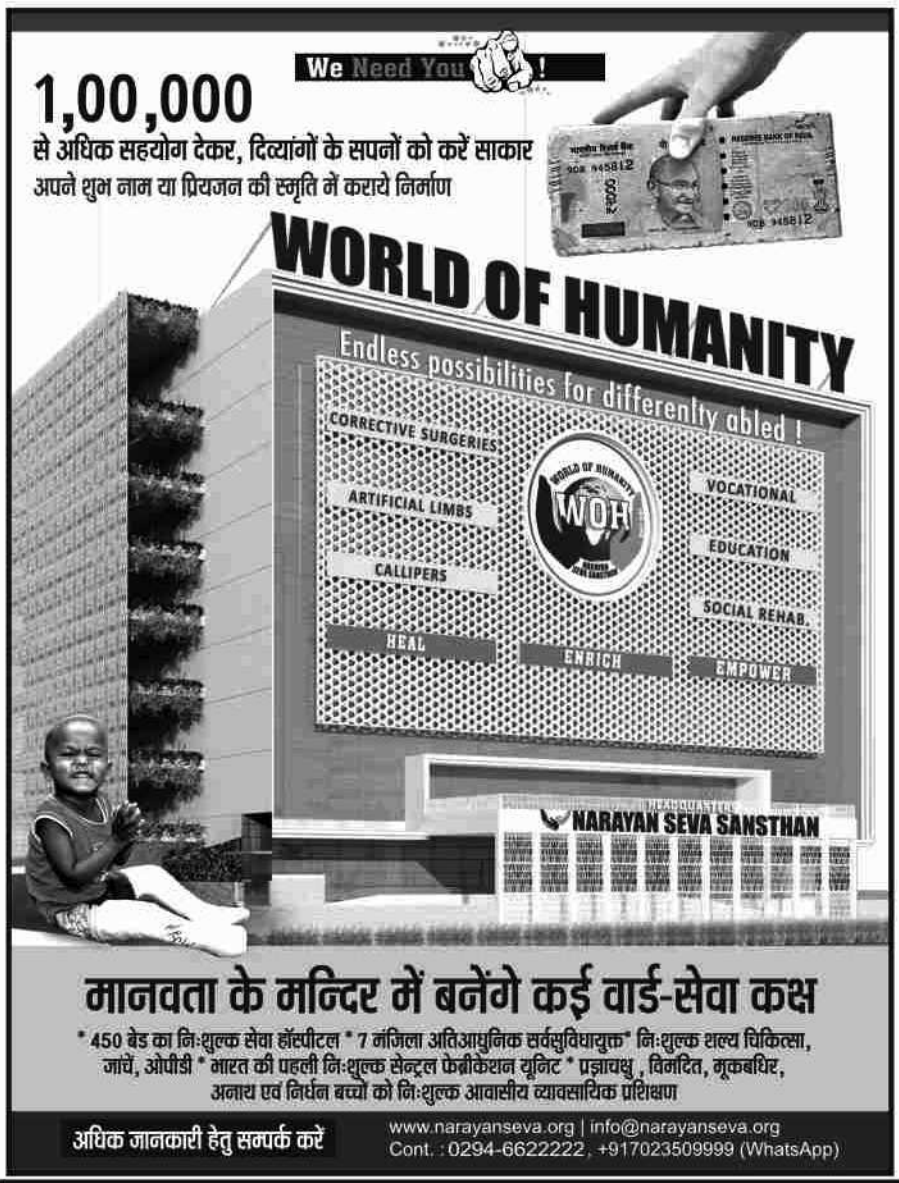

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023